सीखने-सिखाने में लोक खेलों की भूमिका

सलाइ सेल्वम

बचपन से ही मज़े-मज़े में लोक खेल खेलते हुए मैं बड़ी हुई। मुझे यक़ीन है कि इन खेलों ने मेरे व्यक्तित्व को गढ़ा है और मेरे जीवन को भी आनन्दित किया है। इतना कि मैं आज भी अपने आसपास के बच्चों के साथ ये लोक खेल खेलती हूँ। तमिल समाज में, लोक खेल लोगों के दैनिक जीवन का हिस्सा होते हैं। *संगम* साहित्य भी उन बेशुमार लोक खेलों की बात करता है जिन्हें बच्चे घण्टों बिना थके खेलते हैं। उनका बचपन, नाचते-गाते, पेड़ों पर चढ़ते हुए, दौड़ते-भागते, छिपन-छिपाई खेलते, कूदते-फाँदते, आँखों पर पट्टी बाँधने वाला खेल खेलते, खेलों के नियम और उनकी योजनाएँ बनाते बीतता है। कुछेक दिलचस्प तमिल खेल हैं — *कुला कुलैयाँ मुन्दिरिका, सम्निालि पुंगिलि, टिक टिक, कन्ना मूची रे रे, पल्लानगुझी, त्राइ त्राइ बन्धम, ओत्तेया रेत्तैया, चुंगिक का, कबड्डी, दायम* ।

शहरी बच्चों व उनके अभिभावकों के लिए पेबल लाइब्रेरी (मदुरै स्थित *कूड़ांगल* बाल पुस्तकालय) द्वारा आयोजित एक लोक खेल उत्सव के दौरान मैंने इन खेलों में अभिभावकों की सक्रिय भागीदारी देखी थी। अपने बच्चों को ये लोक खेल सिखाते समय अभिभावक ख़ूब ख़ुश नज़र आते थे। एक शिक्षक के नाते, प्राथमिक विद्यालय के अपने विद्यार्थियों के साथ इन खेलों का प्रयोग मैंने अलग रूपों में किया।

ज्ञान को जीवन से जोड़ना, यह सुनिश्चित करना कि सीखना रटने से मुक्त हो, पाठ्यचर्या को समृद्ध करना ताकि वह पाठ्यपुस्तकों के परे जा सके, और कुल मिलाकर आनन्दपूर्ण शिक्षा को बढ़ावा देना, ख़ासतौर से प्राथमिक कक्षाओं में- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के ये सभी मार्गदर्शक सिद्धान्त सीखने की प्रक्रिया में खेलों के प्रयोग के पक्षधर हैं। मैं यहाँ, तमिल भाषा सीखने की प्रक्रिया में लोक खेलों के प्रयोगों सम्बन्धी अपने अनुभव साझा कर रही हूँ।

शिक्षकों के लिए लोक खेल

द डिस्ट्रिक्ट इंस्टिट्यूट, पुडुचेरी[1] ने हमारे वॉलण्टरी टीचर्स फ़ोरम (वीटीएफ़)[2] के लिए एक 'लोक खेल महोत्सव' आयोजित किया। महोत्सव के एक हिस्से के तौर पर हमने एक मंच बनाया जहाँ शिक्षक अपने बचपन के लोक खेल खेल सकते थे, जैसे कि *दायम, गुण्डू, किट्टि, नोण्डि, पल्लानगुझी, कुला कुलैयां मुन्दिरिका, सम्निगिलि पुंगिलि, कतावा तोरा,* कलर-कलर आदि। इन खेलों को खेलने में *गोलि-गुण्डू,*



दायाकट्टाइ, कट्टम जैसी चीज़ों और *कल्लांगल* के लिए पत्थरों का प्रयोग किया गया। इन खेलों में ख़ूब सारी बातचीत और गानों का इस्तेमाल होता है।

महोत्सव सुबह शुरू हुआ। शुरू में प्रत्येक खेल कोई 30 से 60 मिनट तक खेला गया। उसके बाद, शिक्षकों ने अपनी पसन्द के खेल चुने। कुछ तो लगातार एक ही खेल बार-बार खेलते रहे; जबकि दूसरों ने तमाम तरह के खेलों को आज़माया। फिर जल्दी ही उन लोगों ने अपने-अपने समूह बना लिए। भोजन के बाद का सत्र अनुभवों को साझा करने के लिए था।

शिक्षकों की प्रतिक्रियाएँ

- उनकी पुरानी यादें ताज़ा हो गईं। ये खेल उन्हें उनके बचपन में ले गए।
- खेलने में उन्हें इतना मज़ा आ रहा था कि वे रुकना ही नहीं चाह रहे थे।
- उन्हें खेलने का तरीक़ा और खेलों के नियम याद आ गए थे।
- वे इस बात से दुखी हुए कि नई पीढ़ी ये लोक खेल नहीं खेलती।

शिक्षकों दवारा अपने अनुभवों को साझा करना

वीटीएफ़ में शिक्षकों ने बहुत उत्साह से अपने-अपने अनुभवों और अर्जित की हुई सीखों को साझा किया, जिससे सबको अलग-अलग चीज़ें जानने-सीखने को मिलीं। इससे पहले, अपना सिलेबस पूरा करने की धुन में, उन्हें कभी यह ध्यान ही नहीं आया था कि ये खेल उनकी सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को समृद्ध बना सकते हैं। अनुभवों को साझा करने से वे अपनी शिक्षण प्रक्रियाओं को इन खेलों के साथ जोड़ सके।

इसके अलावा, शारीरिक शिक्षा के शिक्षक ने अपने अनुभव साझा करने के साथ-साथ प्राथमिक कक्षाओं के शिक्षकों से आग्रह किया कि उन्हें प्राथमिक स्कूल के बच्चों को नियमित रूप से खेलने देना चाहिए। इससे बच्चे न केवल ख़ुश रहेंगे बल्कि उनके सूक्ष्म पेशीय कौशल भी विकसित होंगे। पाँचवीं कक्षा के बाद तो, विद्यार्थियों के लिए व्यवस्थित खेल व क्रीड़ाएँ होने के साथ-साथ इनके नियत पीरियड भी होते हैं, और ज़िला स्तर की प्रतियोगिताएँ भी होती हैं। लेकिन प्राथमिक कक्षाओं के लिए ये सब नहीं होता। उन्होंने यह भी कहा कि बच्चे जो लोक खेल अपने आप ही खेल सकते हैं, उनसे उनके भीतर समूह में काम करने, टीम का नेतृत्व करने, निर्णय लेने जैसे जीवन-कौशल विकसित होंगे तथा उनकी बहुमुखी प्रतिभाएँ व बौद्धिक क्षमता का सहज विकास सुनिश्चित होगा।

शिक्षकों ने बड़े उत्साह से अपने अनुभव साझा किए और हमारे शिक्षक संसाधन केन्द्र से लोक खेलों पर किताबें उधार लीं, *पल्लानगुझी, दायाकट्टाइ* जैसे खेलों की सामग्री और *किट्टि* के लिए लाठियाँ (स्टिक) इकट्ठी कीं। इस कार्यशाला के बाद, हमें शिक्षकों से ये प्रतिक्रियाएँ मिलीं :

- *कल्लांगल* खेल का इस्तेमाल मैंने नियमों का पालन करने के लिए किया।
- अपने स्कूल में मैंने एक लोक खेल महोत्सव का आयोजन किया।
- हमने अपनी कक्षा में एक पीरियड प्रति सप्ताह कोई एक



लोक खेल खेलने के लिए नियत किया। बच्चे इन खेलों में मस्त हैं।

- हमने लोक खेल गीत इकट्ठे करने के लिए एक प्रोजेक्ट किया।

लोक खेलों के द्वारा भाषार्जन

हमने शिक्षकों हेतु भाषा सीखने और सिखाने के लिए भी खेलों पर एक सत्र आयोजित किया। इस सत्र में, हमने खेलों के ज़रिए भाषार्जन दिखलाने के लिए तमिलनाडु के पारम्परिक लोक खेल कबड्डी को चुना। शिक्षकों ने ख़ुशी-ख़ुशी कबड्डी खेलने से जुड़े अपने अनुभव साझा किए और फिर इस खेल को भाषा-शिक्षण से जोड़ा। उन्होनें अपनी कक्षाओं के लिए नमूना योजनाएँ बनाईं जैसे कि :

- स्थानीय स्तर पर कबड्डी गीत इकट्ठे करना
- इकट्ठे किए गए ये गीत विद्यार्थियों को पढ़ने व गाने के लिए देना
- स्कूल में कबड्डी खेलना (अनुभव और संवाद पर ध्यान देना)
- खेल के नियमों का संकलन बनाना
- अभिभावकों व पड़ोसियों के साथ खेल के अनुभवों का संकलन करना
- खेल के दृश्यों के चित्र बनाना
- मौजूदा गीतों में नई पंक्तियाँ जोड़ना
- कक्षा, स्कूल, अभिभावकों और समुदाय के सामने ये तमाम गतिविधियाँ प्रस्तुत करना।

बच्चों के जीवन अनुभवों को कक्षा में लाना सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव है। कक्षा में भाषा सीखने के अलावा हम समुदाय को भी शामिल कर सके। इस खेल पर एकाग्र होने के चलते शिक्षकों का उत्साह बढ़ा जो भाषा की कक्षा में बच्चों की अनुकूलनीय गतिविधियों की योजना बना पाए और फिर उन्हें कक्षा में ले गए ताकि बच्चों द्वारा खेला गया हर खेल कक्षा के हिसाब से संशोधित किया जा सके।

कक्षा में लोक खेलों का इस्तेमाल

लोक खेलों का प्रयोग इनके लिए हो सकता है :

- भाषा विकास (बातचीत, व्याकरण)
- गणितीय कौशलों का विकास (*तायम, पल्लानगुझी* जैसे खेल)
- कक्षा प्रबन्धन– मसलन, *कुला कुलैयाँ मुन्दिरिका* जैसा खेल, जो प्रदेश भर में 10-4 वर्ष के बच्चे खेलते हैं। बच्चे एक गोल घेरा बनाकर बैठते हैं, एक-साथ एक गाना गाते हैं, जिसे पकड़ना है उस पर नज़र रखते हैं, और फिर दौड़ने लगते हैं। 20 बच्चे तक एक गोल घेरे में बैठ इस खेल को खेल सकते हैं। कक्षा प्रबन्धन के लिहाज़ से इस खेल का इस्तेमाल अनेक तरीक़ों से किया जा सकता है, जैसे कि सीखने के लिए एक भयमुक्त वातावरण बनाना।
- अपने मोहल्ले में बच्चे जो लोक खेल खेला करते हैं, उन्हें स्कूल में खेलने देकर हम एक दोस्ताना माहौल बनाते हैं।
- सूचियाँ व योजनाएँ बनाना सीखने में बच्चों की मदद कर सकते हैं।
- ऐसे खेलों के लिए समय निर्धारित कर हम एक भयमुक्त ज्ञानार्जन का सृजन कर सकते हैं।

सार

आमतौर पर, मैं बच्चों के साथ बातचीत करती हूँ कि वे कौन-से खेल खेलते हैं और सबसे ज़्यादा मज़ा उन्हें किन खेलों में आता है। बच्चों को यह सारी जानकारी साझा करने में बड़ा मज़ा आता है – कब, कहाँ, किसने वह खेल जीता, उस लड़की/लड़के ने क्या बेईमानी की, खेल के कायदे, उनके 'भोंदू' लीडर ने क्या किया आादि। इस तरह की अनौपचारिक बातचीत से उनकी शख़्सियत में निखार आता है, ख़ासकर तब जब इससे किसी बच्चे को एक टीम में जगह मिलती है, उन्हें एक ख़ास तरह का हुनर सीखने को मिलता है। मैं उन्हें मन भर खेलने देती हूँ। लेकिन साथ ही मैं उन्हें यह भी समझाती हूँ कि उन्हें वह खेल क्यों खेलने चाहिए जो उन्हें पसन्द नहीं, और यह भी कि उन्हें उन लोगों के साथ भी खेलना चाहिए जो उन्हें अच्छे नहीं लगते। मैं उन्हें समय निकाल कर कहानियाँ पढ़ने के लिए भी कहती हूँ क्योंकि कहानियाँ भी खेलों की मानिन्द होती हैं जिनसे बहुत-सी दिलचस्प चीज़ें सीखी और जानी जा सकती हैं। मैं खेलों या खेलों पर बातचीत के ज़रिए सीखने को एक विस्तार देती हूँ क्योंकि जैसा हॉवर्ड गार्डनर (Howard Gardner) कहते हैं, खेल बच्चों की बहु बुद्धियों को विकसित करने में मदद करते हैं।

एक शिक्षक-प्रशिक्षक होने के नाते मैं शिक्षकों को सुझाती हूँ कि वे ऐसे खेल चुनें जो बच्चों को आनन्द देते हों और जो बच्चों के स्थानीय सन्दर्भ के उपयुक्त हों। कक्षा में पाठ शुरू करने से पहले या उसके बाद, या फिर उनके द्वारा कोई मुश्किल कार्य सम्पन्न करने के बाद, या कि यूँ ही, प्रसन्न मन बनाने के लिए भी, शिक्षक विद्यार्थियों को कक्षा में कुछ खेल खेलने दे सकते हैं।

मुझे विश्वास है कि आनन्दपूर्ण, सहज शिक्षा के लिए, बच्चों के

सामाजिक अनुभवों को समुचित महत्त्व देने के लिए, और खेल के माध्यम से सीखने के लिए हम लोक खेलों को प्राथमिक स्कूल में सीखने की गतिविधियों का केन्द्र बिन्दु बना सकते हैं। आज शिक्षकों के लिए यह जानना ज़रूरी है कि बच्चों के खेल अनुभवों में तमाम छिपे हुए गणितीय फलन तथा भाषा-कौशल और व्यक्तित्व के तत्व निहित होते हैं। हम कक्षाओं में शुरुआती संख्यात्मकता व साक्षरता के साथ लोक खेलों की इस अवधारणा के गठजोड़ की कल्पना सहज ही कर सकते हैं।

टिप्पणियाँ

1. डिस्ट्रिक्ट इंस्टिट्यूट्स (डीआई)– अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन द्वारा स्थापित डीआई का लक्ष्य है शिक्षकों, प्रधान अध्यापकों व शिक्षा से जुड़े अन्य पदाधिकारियों की पेशेवर क्षमताओं के निर्माण पर ध्यान केन्द्रित करते हुए बच्चों के सीखने के स्तरों को बेहतर करना। यह कार्य इन बहुविध जुड़ावों द्वारा किया जाता है– अनौपचारिक शिक्षण समूह, छोटी चर्चाएँ, शिक्षकों के सीखने के केन्द्र (टीएलसी), कार्यशालाएँ, स्कूल भ्रमण, अनुभवात्मक भ्रमण आदि। टीएलसी के विस्तृत नेटवर्क के ज़रिए शिक्षकों को पुस्तकें, शिक्षण व सीखने की सामग्रियाँ, कम्प्यूटर व इंटरनेट कनेक्शन, प्रयोगशाला के उपकरण व सामग्री जैसे संसाधन उपलब्ध कराए जाते हैं।
2. वॉलण्टरी टीचर्स फ़ोरम (वीटीएफ़)– अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन (एपीएफ़) की इस पहल की केन्द्रीय प्रेरणा है निरन्तर पेशेवर विकास के ज़रिए शिक्षकों का क्षमता-संवर्धन करना। ये वीटीएफ़, शिक्षक के सतत पेशेवर विकास की ओर एपीएफ़ के बहु-विध (मल्टी-मॉडल) व समेकित दृष्टिकोण का एक अटूट हिस्सा हैं।



सलाइ सेल्वम अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के पुडुचेरी डिस्ट्रिक्ट इंस्टिट्यूट की स्रोत व्यक्ति हैं। वह शिक्षकों के क्षमता-संवर्धन कार्यक्रम से जुड़ी हैं और भाषा-विकास पर उनका विशेष आग्रह रहता है। वे एक लेखक व अनुवादक भी हैं और एक बाल पत्रिका की सम्पादक भी रही हैं। एक शिक्षाविद् होने के नाते, वे कक्षा पुस्तकालयों के लिए सर्व शिक्षा अभियान की पुस्तक पठन परियोजना जैसे प्रयोगों से जुड़ी रही हैं। तमिलनाडु की पाठ्यक्रम पाठ्यपुस्तक समिति की सदस्य भी रही हैं। वे तमिलनाडु विमेन को-ऑर्डिनेशन फ़ोरम की सदस्य होने के साथ ही मदुरै विमेन रीडर्स फ़ोरम (2006) की संस्थापक हैं। नारी सशक्तिकरण के लिए चलाए जाने वाले कई और अभियानों से जुड़ी हुई हैं। उनसे salai.selvam@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** मनोहर नोतानी